International Journal of Arts, Humanities and Social Studies

ISSN Print: 2664-8652
ISSN Online: 2664-8660
Impact Factor: RJIF 8
IJAHSS 2023; 5(2): 66-68
www.socialstudiesjournal.com
Received: 25-09-2023
Accepted: 30-10-2023

डॉ. गीता पाण्डेय
शोध–निर्देशक, हिन्दी विभाग, महिला कालेज डालमिया नगर सासाराम, रोहतास, बिहार, भारत

रीता यादव
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महिला कालेज डालमिया नगर सासाराम, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. गीता पाण्डेय
शोध–निर्देशक, हिन्दी विभाग, महिला कालेज डालमिया नगर सासाराम, रोहतास, बिहार, भारत

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में वैयक्तिक समस्याओं का स्वरूप

डॉ. गीता पाण्डेय, रीता यादव

DOI: https://doi.org/10.33545/26648652.2023.v5.i2a.105

सारांश
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में राजेन्द्र यादव की गणना होती है। उन्होंने शहरी मध्यवर्गीय जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, नैतिक आदि विभिन्न पक्षों को लेकर अपने कथा साहित्य की रचना की है। इसमें मध्यवर्ग के ध्वंसोन्मुखी समाज की रूढ़ियों, विषमताओं, कुण्ठाओं और अंधविश्वासों का सम्यक् विवेचन किया गया है। आधुनिक शहरी मध्यवर्ग–जीवन के जितने यथार्थ चित्र उन्होंने उपस्थित किए हैं, उतने किसी भी अन्य स्वतन्त्रता–परवर्ती कथाकार ने नहीं किए हैं। आधुनिक युगबोध और भावबोध को पहचानने की उनकी क्षमता ही इससे व्यक्त होती है। उन्होंने कला और जीवन का सामंजस्य करके उनका समन्वित रूप ही अपने उपन्यास और कहानियों के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके कथा साहित्य में मानवतावाद का वह नवीन रूप परिलक्षित होता है, जिसमें परम्परागत आदर्शों और मूल्यों के साथ विकसित प्रवृत्तियों का समन्वय है। इस दृष्टि से उनके उपन्यास और कहानी हिन्दी की विशिष्ट उपलब्धियों के रूप में स्वीकार किए जायेंगे।
स्वातंत्र्योत्तर भारत में मध्यवर्ग, घुटन और टूटन का शिकार बन गया था। राजेन्द्र यादव ने मध्यवर्ग के कथाकार होने के कारण अपने कथा साहित्य में मध्यवर्ग की दीनता–दासता, अवसादपूर्ण विडम्बनों, विसंगतियाँ–विद्रूपतों, बनते–बिगड़ते सामाजिक और वैयक्तिक सम्बन्ध आदि का चित्रण पूरी ईमानदारी के साथ किया है। समसामयिक मध्यवर्ग की युवा–पीढ़ी में जो क्षोभ और आक्रोश की भावना है उसके शक्तिशाली वक्ता के रूप में कथाकार राजेन्द्र यादव की ख्याति है, जो उनके उपन्यासों में स्पष्ट परिलक्षित भी होती है।

कूटशब्दः राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में वैयक्तिक समस्याओं, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक

प्रस्तावना
राजेन्द्र यादव जी ने अपने उपन्यास सारा आकाश के बारे में लिखा है कि "सारा 'आकाश' मुख्यतः निम्न मध्यवर्गीय युवक घर के बाहर की समस्या है। घर में इसी समस्या का दूसरा पहलू पति–पत्नी के बीच के अस्तित्व के संघर्ष की कहानी है।"[1] यह संवादहीनता है। समर अपनी पत्नी से नौ साल तक बात–चीत नहीं करता। समर पर मानसिक संस्कार है। वह जीवन में कुछ बनने के लिए जीवन के अर्धंग एवं पूरक अंग की उपेक्षा करना चाहता है। वह विवाह के बाद नारी को सहगामिनी नहीं समझ पाता। वह प्रभा को बराबरी का दर्जा देने की बात नहीं सोच पाता। समर को अपनी रूचि के अनुकूल वन–साथी चुनने का अधिकार नहीं प्राप्त था। समर और प्रभा के बीच संवादहीनता का तीसरा कारण संयुक्त परिवार की प्रथा है। मध्य संस्कार, जीवन संगिनी को चुनने का अधिकार का अभाव और संयुक्त परिवार का प्रतिकूल वातावरण समर और प्रभा में संवाद की स्थिति पैदा होने देने में बाधक हैं।
संयुक्त परिवार के आर्थिक दबावों पर विचार कर लेना भी आवश्यक है। समर के परिवार में जब देखो तब रुपये–पैसे की तंगी की बातें होती ही रहती है। जब समर नौकरी पर लग जाता है, तो घरवालों का रवैया समर और प्रभा के प्रति उदार हो जाता है। नौकरी छूट जाने के बाद तो समर निराश होकर आत्महत्या का विचार तक करने लगता है। इस आर्थिक विवशता को देखते हुए इतना तो स्पष्ट ही है कि अपने पैरों पर खड़े हुए बिना युवकों को विवाह का विचार नहीं करना चाहिए। संयुक्त परिवार में रहने वाले व्यक्ति को बाहर आर्थिक लड़ाई लड़नी पड़ती है तथा परिवार के भीतर पारिवारिक उलझनों से शान्ति नहीं मिल पाती। यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि संयुक्त परिवार के टूटने पर बूढ़े माँ–बाप का क्या होगा? परिवार के जो सदस्य अभी वयस्क नहीं हुए हैं, जो अपने पैरों पर प्रयत्नों के बावजूद खड़े नहीं हो सके हैं उनका क्या होगा?
उपन्यासकार ने पति–पत्नी के बीच दिखने वाली संवादहीनता को विशेष रूप में अपना लक्ष्य बनाया है। संक्षेप में 'सारा आकाश' उपन्यास संयुक्त परिवार से जुड़ा है वह भी ऐसे संयुक्त परिवार से जो कि निम्न मध्यवर्गीय है।

संयुक्त परिवार के संस्कार के लिए अपनी पत्नी प्रभा से संवाद स्थापित करने में बाधक बनते हैं। वह प्रभा से नहीं बोलता प्रभा सास–ससुर, देवर, जेठ–जेठानी इन सबके अत्याचार सहन कर एक नौकरानी की तरह दिन–रात काम करती रहती है। उसका एक मात्र है सहारा है मुन्नी। कुछ दिनों बाद मुन्नी भी ससुराल जाती है तब वह सहारा भी नहीं रहता। एक दिन सास–ससुर प्रभा के चरित्र पर लांछन लगाते हैं तो वह फूट–फूट कर रोती है और रात को बड़ी देर तक गमगीन हो छत पर बैठकर सिसकियां लेती है। जब समर उसके पास जाता है और वार्तालाप से उसे निर्दोष पाता है, तब से दोनों में प्रेम और सुसंवाद स्थापित होता है। 'सारा आकाश' का मूल प्रतिपादन या मूल लक्ष्य है। संयुक्त परिवार की बुराइयों को उजागर करना, अर्थ के अभाव में घुटती जिन्दगी का चित्र खींचना, निम्न मध्यवर्गीय व्यक्ति की प्रश्न–पीड़ित जिन्दगी को प्रकट करना तथा आशा–आकांक्षाओं के बीच बेचौन जिन्दगी को स्पर्श करना स्वयं राजेन्द्र यादव का यह कथन उपन्यास के प्रतिपाद्य को संकेतित करता है, ''सारा आकाश' प्रमुखतः निम्न मध्यवर्गीय युवक के अस्तित्व व संघर्ष की कहानी है आशाओं, आकांक्षाओं और आर्थिक, सामाजिक, सांस्कारिक सीमाओं के बीच चलते द्वन्द्व, हारने–थकने और कोई रास्ता निकालने की बेचौनी की कहानी है।''[2] 'सारा आकाश' की प्रमुख समस्या बेटे–बेटियों की ट्रेजेडी को प्रकट करना है, जो अपने जीवन साथी के चुनाव के अधिकार से वंचित हैं और घुटन भरी स्थिति में साँस खींचने को विवश हैं। विवाह की डोर जब तक माँ–बाप के हाथ से छुटकर युवक–युवतियों के हाथ नहीं आयेगी तब तक नव दम्पत्ति को घुटन तथा यातनाओं की जिन्दगी जीनी पड़ेगी। स्वयं राजेन्द्र यादव के शब्दों में कहा जा सकता है, "सारा आकाश की ट्रेजेडी, किसी सन, समय या व्यक्ति विशेष की ट्रेजेडी नहीं, खुद चुनाव न करने की, दो अपरिचित व्यक्तियों को एक स्थिति में झोंककर भाग्य को सराहने या कोसने की ट्रेजेडी है। संयुक्त परिवार में जब तक यह चुनाव नहीं है, सकरी और गन्दी गलियों की खिड़कियों के पीछे लड़कियाँ 'सारा आकाश' देखती रहेंगी, लड़के दफ्तरों, पार्कों और सड़कों पर भटकते रहेंगे, 'एकान्त आसमान' को गवाह बनाकर अपने आप से लड़ते रहेंगे।''[3]

'उखड़े हुए लोग' उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष को ही लक्ष्य बनाया गया है। यह संघर्ष परिवार की दृष्टि से प्रेम और विवाह की समस्या को लेकर है साथ ही बाहर के आर्थिक शोषण की समस्या को भी पूर्ण रूप से उभारने का प्रयास किया गया है। विवाह सम्बन्धी समस्या पर उपन्यास में विस्तार से चर्चा हुई है। आजादी के पश्चात् देश को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों में बड़ी तेजी से परिवर्तन हुआ। उपन्यास के केन्द्रीय पात्र शरद जया अन्तर्जातीय विवाह ही नहीं बल्कि विवाह किये बिना सम्मिलित जीवन बिताने का निश्चय करके आगरे को छोड़ देशबंधु के 'स्वदेश महल' में आकर रहने लगते हैं। परन्तु पूँजीवादी अर्थव्यवस्था उनको झकझोर देती है। अतः केवल सात दिनों में ही उस स्थान को छोड़कर वे वहाँ से भाग जाने को बाध्य होते हैं। यहाँ उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य इस बात का चित्रण करना है कि वर्तमान राजनीति, समाज एवं अर्थव्यवस्था में मध्यवर्गीय लोग उखड़े हुए हैं। शरद–जया प्रोफेसर कपिल, कवि चम्पक, केशव आदि सब उखड़े हुए लोग हैं। प्रोफेसर कपिल और सूरज के प्रति शरद का यह कथन ''सचमुच वास्तविकता यह है कि हम सब टूटे हुए व्यक्तित्व के लोग हैं। हमारे स्वाभाविक गठन और व्यक्तित्व को कुछ इस तरह मरोड़ दिया गया है जैसे गीली मिट्टी से बनी सुन्दर मूर्ति को कोई अत्यन्त निर्दयता से मरोड़ डालें। इस तरह की कुछ हमारी सूरतें हो गयी हैं। हम देखते कहीं हैं चलते कहीं है और वास्तविकता कुछ और है। और हम इतने मुड़े–तुड़े हैं कि अपनी सारी शक्तियों को कहीं एक जगह केन्द्रित भी नहीं कर पाते इसलिए भटकते– लड़ते हैं और कष्ट पाते हैं।''[4]

प्रस्तुत उपन्यास आजादी के बाद की राजनीति और उसके पतन की ओर संकेत करते हुए उच्च वर्ग द्वारा दिये जानेवाले निम्न तथा मध्यवर्ग के शोषण पर तीखा व्यंग्य करता है और उन तथाकथित देश सेवकों तथा जनप्रतिनिधियों का भंडा फोड़ करता है जो देश सेवा के नाम पर अपनी नीच से नीच आकांक्षाओं की पूर्ति में जुट गये हैं। देश सेवा और आदर्शों की दुहाई देने वाले देशबन्धु जैसे नेता खादी के कपड़े की आड़ में विलासपूर्ण और अनैतिक जीवन जीते हैं और उपकार सहायता के नाम पर शरद जैसे मध्यवर्गीय युवकों को शोषण का शिकार बनाते हैं। उन्हें जमने नहीं अपितु उखाड़ देते हैं।

'कुलटा' उपन्यास में मिसेज तेजपाल और मेजर तेजपाल के दाम्पत्य जीवन की समस्या को उठाया गया है। सुखी दाम्पत्य जीवन की कुंजी है पति–पत्नी में सच्चा प्रेम सामंजस्य, मेल, सन्तुलन, कोमल एवं सूक्ष्म मानवीय भाव और एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना। यदि इन बातों का अभाव हो तो दाम्पत्य जीवन, जीवन न रहकर जहर बनता है। मिसेज तेजपाल शादी के आठ–नौ साल बाद भी उसे मातृत्व नहीं मिला 'था। अकेलापन चरमसीमा' तक बढ़ जाने के कारण पुराने परिचित व्यक्ति वायलिनिस्ट के पास चली जाती है। मेजर तेजपाल को नपुंसक होने का संकेत होता है। मिसेज तेजपाल में अपने व्यक्तित्व को पूर्णत्व प्रदान करने की ललक है, रूढ़ि परम्परा के प्रति घोर विद्रोह है, अतृप्त काम को तृप्त करने तथा मातृत्व पाने की अदम्य आकांक्षा हैं, जो अपने अस्तित्व के प्रति सजग है और जिनमें जीवन को संवारने की जीवन्त शक्ति है। मेजर तेजपाल नपुंसक रूढ़ियों परम्पराओं से चिपके हैं। अपनी पत्नी की सूक्ष्म भावनाओं को समझ लेने की अपेक्षा उन्हें दबोचती रहती हैं और पतित्व के अहं के कारण अपना दाम्पत्य जीवन का सुख खो बैठते हैं। परिणामस्वरूप पति–पत्नी में प्रेम और मेल का अभाव होता है। दोनों पति–पत्नी के द्वारा उपन्यासकार यह कहना चाहते हैं कि आज प्राचीन रूढ़ियों, परंपराओं तथा संस्कारों को जीवन जीने की अदम्य शक्ति, आकांक्षा और अस्तित्वबोध ने तोड़ा ही नहीं बल्कि नपुंसक सिद्ध कर दिया है। स्वयं राजेन्द्र यादव के शब्दों में, "हमारी नैतिक, सामाजिक जड़ परंपराओं, रूढ़ियों तथा जीवन की अप्रतिरोध्य उद्दाम शक्ति के संघर्ष और द्वन्द्व की कहानी अपनी समझ में मैंने 'कुलटा' में कही है। ये सामाजिक रूढ़ियाँ और जड़ परम्परों जिनकी अपनी जीवन–शक्ति विघटित और समाप्त हो चुकी है– "आज नपुंसक हो गयी हैं।"[5] दाम्पत्य–जीवन में प्रेम का बंधन न होने पर जो अभाव, वैषम्य असामंजस्य और विक्षोभ पैदा हो जाता है उसकी कहानी बड़ी कलात्मक ढंग से इस उपन्यास में राजेन्द्र यादव ने पेश की है। मिसेज तेजपाल दाम्पत्य–जीवन की कृत्रिमता को ठोकर मारकर अपने प्रेमी के साथ चली जाती है, यह स्वाभाविक ही नहीं उसके लिए एकमात्र रास्ता था। इसके साथ ही उच्च मध्यवर्गीय लोगों का चित्रण करना भी लेखक का लक्ष्य दिखायी देता है।

राजेन्द्र यादव के उपन्यास 'शह और मात' में दो पात्र उदय और सुजाता के माध्यम से लेखक की मानसिक उलझन का चित्रण कर लेखकीय व्यक्तित्व की समस्याओं को उपस्थित किया गया है। राजेन्द्र यादव का कहना है कि ''शह और मात' मेरी समझ में केवल उदय की मानसिक उलझन की कहानी है।''[6] उपन्यास व्यक्ति और लेखक का द्वन्द्व अर्थात 'कर्ता' और 'दृष्टा' के आपसी सम्बन्धों और संघर्षो का रूपक है, जिसे आज की भाषा में विषय–निष्ठता और पात्र निष्ठता की समस्या कहेंगे। रचना प्रक्रिया का अनुभव बताता है कि लेखक और मनुष्य में इस द्वन्द्व में हारना मनुष्य ही है। अपने लेखन के प्रति ईमानदार लेखक को किन मानसिक व्यथाओं में गुजरना पड़ता है। इसका चित्रण 'शह और मात' का प्रमुख लक्ष्य है। उपन्यास का साथ चली 'चाल' नायक उदय अपने लेखन पेशे के प्रति ईमानदार है। उसका व्यक्तित्व दो भागों में खंडित है– एक लेखक उदय और दो व्यक्ति उदय। सुजाता के में लेखक उदय जीत जाता हैं, फिर भी उसे

अपनी जीत से ग्लानि होती है। चूँकि अपने में निहित 'लेखक' उदय को सुरक्षित रखने के लिए उसे सुजाता के साथ आये अपने जीवन के कोमल, भावुक क्षणों में, प्रेम–प्रसंगों के तटस्थ, भावना शून्य, निर्दय और क्रूर होना पड़ता है। उसमें निहित 'व्यक्ति' उदय को जीवन के आनन्द से वंचित रहना पड़ता है। वह स्वयं को पराजित समझता है और अपनी डायरी में लिखता है ''मुझे लगता है कि कलाकार सब कुछ हो सकता है–खुद वह 'आदमी' हो ही नहीं सकता। हाँ, वह 'आदमी' का दूत होता हो, तो हो।"[7] उदय का यह मन उपन्यास के प्रतिपाद्य को स्पष्ट करता है। लेखक और व्यक्ति के द्वन्द्व में उलझे उदय की मानसिक व्यथा को अभिव्यक्त करना उपन्यास की प्रधान समस्या है। सुजाता को भी अपने व्यक्तित्व के दोनों क्षेत्रों लेखन और प्रेम में मात खानी पड़ती है। यहाँ लेखक का यह स्पष्ट मत है कि कला की दुनियाँ में कमजोर आदमी को स्थान नहीं है। कलाकार कमजोर हो तो वह कलाकार रह नहीं सकता। कलाकार के व्यक्तित्व की कला के प्रति प्रवृत्ति कलाकार के स्वधर्म के समान होती है। उपन्यास में लेखकीय व्यक्तित्व की समस्या को उपस्थित किया गया है। 'शह और मात' में एक स्थान पर श्लील–अश्लील की व्याख्या सुंदर शब्दों में की गयी है। सुजाता ने लिखा है– ''जो कुछ सुंदर है, जो कलापूर्ण है, उसमें 'नंगापन' 'लज्जास्पद' या 'वर्जनीय' नाम की कोई चीज नहीं होती। कहते हैं 'आत्मीय' नाम की कोई चीज नहीं नंगापन और लज्जास्पद कुछ भी नहीं होता...वहाँ तो आवरण ही बाधा होता है। कला को उसी हद तक आत्मसात कर लेने के बाद शायद उसमें भी 'नंगा' और 'वर्जनीय' कुछ न रह जाता है।''[8]

'कुलटा' के विपरीत 'अनदेखे अनजाने पुल' में कुरूपता की ग्रन्थि से जकड़ी निन्नी का चित्रण किया गया है, जो अन्त में दर्शन के आत्मीयता से सरोबार चुंबन सरोवर में नहाकर व्यक्तित्व के 'कायाकल्प' का अनुभव कर सकने में समर्थ हुई है। के निन्नी काली लड़की है। बचपन से ही कुरूपता की ग्रन्थि उसके व्यक्तित्व को परिचालित किए हुए है। कालेपन से मुक्ति पाने की लालसा के कारण बचपन में वह पार्वती की पूजा किया करती थी, किन्तु पार्वती ने उसकी मनोकामना पूरी नहीं की। किशोर होने पर पग–पग पर उसे कालेपन के कारण दया का विषन बनना पड़ा। मां बाप भी उससे प्यार नहीं करते। कालेपन के कारण यह समवयस्क लड़कों की हिकारत का शिकार बनती रही। उसमें हीनता का भाव घर कर गया था। अपमान की आशंका और अपमानित होने पर वह ग्लानि के अंधेरे में डूब जाती है। वधु परीक्षा में 'नापास' कर दिये जाने पर गृहस्थी का सुख उसके लिए नहीं है। वह कालेपन से छुटकारा पाना चाहती है। वैज्ञानिक प्रगति उसे दो कड़ी की लगती है। वैज्ञानिकों पर उसे गुस्सा आता हैं। कालापन उसके व्यक्तित्व की बीमारी का कारण बन गया। वह कालेपन में आत्मसमाधान खोजने का प्रयत्न करने लगती है। प्रसन्न रहने का प्रयत्न करती है। उसे गोरे व्यक्ति की कुरूपता को खोज निकालने पर क्रूर संतोष मिलता है। कालेपन का यथार्थ अपने 'नुकीले' पंजे गड़ाकर उसे अपनी सही स्थिति का बोध कराता रहा। दर्शन के व्यवहार में आत्मीयता और मधुर खुलापन देखकर निन्नी के मन में अपनेपन की भावना अंकुरित हो उठी। दर्शन के आत्मीय व्यवहार के कारण निन्नी के व्यक्तित्व की कुरूपता की ग्रन्थि शिथिल हुई दर्शन की प्रेमिका के सम्बन्ध में जान चुकने पर भी अपनी भावनात्मकता के बल पर वह दर्शन के मन की जीत लेने का प्रयत्न पात्रों के माध्यम से करती रही। दर्शन के विवाह की सूचना उसे अपने रंग–रूप के बाहरी व्यक्तित्व के अस्वीकरण की सूचना प्रतीत हुई। वह अत्यधिक कुण्ठित हो उठी। उसका कुण्ठित मन यह सोचने लगा कि उसको कुरूपता किसी पूर्वजन्म के पाप का फल है। यह पूजापाठ करने लगती है। शरीर को नष्ट करने लगती है। कड़ी ठंडी में गरम कपड़े न पहनने के कारण उसे निमोनिया हो गया। अपनी कुरूपता के कारण तंग निन्नी के दर्शन के सामने मरने की इच्छा प्रकट की विदा होते समय दर्शन ने निन्नी के होठों को चूम लिया। निन्नी के मन का तनाव समाप्त हो जाता है। बीमारी से मुक्त हो जाने पर निन्नी के मन में यह बात अवश्य उभरती है कि उसका भी 'अपना घर' होता। उसे इस बात का संतोष है कि जिंदगी की जो कुछ भी पूँजी उसे मिली है, उसे उसने सही दिशा में ही लगाया है और जितना कुछ बन पड़ा है अपने को अवरूद्ध रखने वाली सीमाओं को लांघने की कोशिश की है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि उपन्यास में निन्नी के मानसिक द्वन्द्व की अभिव्यक्ति अत्यन्त सफलता के साथ हुई है। कुरूपता की ग्रन्थि की समस्या से सम्बन्धित इस उपन्यास में सौन्दर्य के स्वरूप का चिंतन अपेक्षित ही था। उपन्यास का केन्द्र बिन्दु निन्नी है। उसे लोगों का प्रेम नहीं मिलता। उसके लिए दुनिया का हर दरवाजा बंद है। कुरूपता के कारण उसे प्रेम से वंचित रहना पड़ता है। गृहस्थी सुख से वंचित होना पड़ता है। प्रस्तुत उपन्यास की प्रमुख समस्या कुरूपता को स्पष्ट करना है। निन्नी की समस्या किसी–न–किसी रूप में हर लड़की की समस्या हो सकती है। जिसके कारण वे जीवन रस खो बैठती हैं। ऐसे में आत्मीयता का एक चुंबन भी उनकी हीनता की ग्रन्थि की बीमारी पर असरकारी साबित होता है जिससे कि उसको जीवन जीने की नयी शक्ति प्राप्त होती है। यह शक्ति निन्नी को प्राप्त हुई। निन्नी अपना सेतु स्वयं बनकर हीनता की ग्रन्थि के गड्ढे को पार कर चुकी है। अपने में स्थित हैण्डी (कैप) होने की ग्रन्थि के अनुभव के कारण लेखक ने निन्नी की कुरूपता की ग्रन्थि को बड़ी कुशलता से अभिव्यक्त किया है।

सन्दर्भ

1. सारा आकाश (उपन्यास) राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण– 2008 पृ०–14
2. सारा आकाश (उपन्यास) राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण– 2008 पृ०–14
3. वही, पृ०–9–10
4. उखड़े हुए लोग (उपन्यास) राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन नयी दिल्ली, संस्करण– 2007, पृ०–45.
5. कुलटा (उपन्यास) राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2004, पृ०–16
6. शह और मात (उपन्यास) राजेन्द्र यादव, भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 2008
7. शह और मात (उपन्यास) राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2008 पृ०–86
8. शह और मात (उपन्यास) राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2008 पृ०–93